बरेली, सोमवार
27 अप्रैल, 2026
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00

दैनिक जागरण

...जब शत्रुता से ऊपर उठकर रावण ने किया था ब्राह्मण धर्म का निर्वहन

रिद्धिमा मे नाटक मचन प्रस्तुत करते कलाकार • सौ. आयोजक

जासं, बरेली: एसआरएमएस रिद्धिमा में रविवार को 'पौलस्त्य' नाटक का मंचन हुआ। इसमें भारतीय पौराणिक कथाओं के जटिल और बहुपक्षीय पात्रों में से एक पौलस्त्य (रावण) के जीवन के अनदेखे आयामों को उजागर किया गया। रावण को शिवभक्त, विद्वान, राजनीतिज्ञ, संगीतज्ञ और धर्मशास्त्रों के ज्ञाता के रूप में प्रस्तुत किया गया।

नाटक का आरंभ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा अनरण्य और युवा रावण यानि दसग्रीव के द्वंद्व युद्ध से होता है। दसग्रीव अनरण्य को तो पराजित करता ही है। उसके इक्ष्वाकु कुल का भी अपमान करता है। इससे नाराज अनरण्य दसग्रीव को श्राप देता है कि हमारे इक्ष्वाकु कुल में पैदा वीर ही तुम्हारा अंत करेगा। कुछ समय बाद युवा दसग्रीव रावण के रूप आता है। उसे श्राप याद आता है कि कहीं राम उसी का हेतु बन कर तो नहीं आया। दूसरी तरफ राम ने सागर तट पर सीता को वापस लाने के लिए सेतु का निर्माण किया, शिवलिंग स्थापित की। उसकी स्थापना पूजन के लिए राम चिंतित होते हैं। शिवलिंग की पूजा के लिए स्वयं रावण को पुरोहित के रूप में आमंत्रित किया जाता है, जहां वह शत्रुता से ऊपर उठकर अपने ब्राह्मण धर्म का निर्वहन करता है। रावण सीता को पूजन में ले आता है और यज्ञ के बाद उसको वापस लंका ले आता है, क्योंकि रावण को पता है कि नियति को पूर्ण करने के राम को युद्ध के लिए लंका आना ही होगा। रावण पुरोहित के रूप में राम को लंका विजय का भी आशीर्वाद देता है। अंत में रावण भगवान शिव और भगवान राम को स्मरण करते हुए प्राण त्याग देता है। निर्देशन विनायक कुमार श्रीवास्तव, कहानी लेखन डा. प्रभाकर गुप्ता और अश्वनी कुमार ने नाटक का रूपांतरण किया। नाटक में रावण की भूमिका विनायक श्रीवास्तव और राम की भूमिका गौरव कक्कों ने निभाई। लक्ष्मण के रूप में मानेश यादव और सीता के रूप में अदिति भारद्वाज दर्शकों के सामने आए। हर्ष यादव (अनरण्य), शिवम यादव (जामवंत), भूपेश (हनुमान), निशांत (सुग्रीव), शिवा शर्मा (दसग्रीव और विभिषण) और हिरदयांश (सैनिक) ने भी अभिनय से प्रभावित किया। इस दौरान ट्रस्ट संस्थापक देव मूर्ति, आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति, ऋचा मूर्ति, दैविशा मूर्ति, उषा गुप्ता, डा. रजनी अग्रवाल आदि मौजूद रहे।